मिट्टी की पुकार

अरे सुनो मेरी पुकार
हो रही हूँ मैं लाचार
बरसात तो यहाँ पर आया ही नहीं
पानी की एक बूँद भी मुझपर बरसा नहीं।

बरसात ने किया था वादा पिछली बार
कि आऊँगी मैं बिल्कुल समय पर
मगर आया ही नहीं
बूँद बरसाया ही नहीं।

किसान - जो खुद से ज़्यादा भरोसा रखता है मुझपर
जो करता है महनत दिन - रात भर
जिसकी ज़िंदगी है मुझपर निरभर
क्या जवाब दूँ मैं उसे ?

गला है मेरा सूखा - सूखा
एक बूँध का इंतज़ार है इस तन का
एक बूँध जो प्यास मिठाती है
एक बूँध जो ज़िंदगी लौटाती है।

जैसे एक बच्चे को है माँ का इंतज़ार
आज मैं ज़िंदा हूँ तुम्हारी उम्मीद पर
तुमने जो वादा किया था
उसे तोड़ो मत, मुझे मारो मत।

ये सब सुनकर बरसात ने बोला
इनसान - जिसने मुझे इस हाल में डाला
जिसने तुझसे हरियाली छीना
उससे पूछो ये सवाल, उससे माँगो तू जवाब।

नहीं मिलेगा तुझे जवाब
क्योंकि वह व्यस्थ है अपने आप पर
ज़रा भी दुख नहीं अपने कारवाइयों पर
ज़रा भी खयाल नहीं इस मिट्टी पर।

उसके कारवाइयों ने करा है मेरी संतुलन को नाश
कमाइयों के नाम पर कर रहा है इस मिट्टी को एक लाश
उसके नीच कर्म से
हो रही हो तुम लाचारी, खा रही है तुझे बीमारी।

उसने पेड़ काटा, पैसे उगाया,
महल बनाया, खेतों को दबाया
खुदरत को बहुत सताया
इसकी वजह मैं आ नहीं पाया।

पर आऊँगी मैं जरूर एक दिन
मिट्टी पर खुशी बरसाने
सूखी ज़मीन को जीवन देने
तू भरोसा रख, उम्मीद रख।

तुमसे मैंने जो वादा की थी
करूँगी मैं उस वादा को पूरा
मिट्टी पर होगा पानी की बरसात
सब जगह होगा हरियाली की त्यौहार।